चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	12.5.22	4	1-6

कार्यक्रम

पंचनद शोध संस्थान अध्ययन केंद्र के सहयोग से भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान विषय पर हुई संगोष्ठी

1857 की क्रांति में 60 हजार महिलाओं का बलिदान : प्रो. कांबोज

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। 1857 की क्रांति में महिलाओं ने अदम्य साहस का परिचय दिया। करीब 60 हजार महिलाओं ने बलिदान दिया। यह कहना है चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज का। वे आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पंचनद शोध संस्थान अध्ययन केंद्र के सहयोग से 'भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महिलाओं का योगदान' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

कुलपति ने कहा कि महिलाओं ने शांतिपूर्ण आंदोलनों से लेकर क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रियता से भाग ही नहीं लिया, स्वाधीनता के लिए प्राणों का बलिदान तक कर दिया। मुख्य वक्ता दयानंद महाविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर एवं इतिहासकार डॉ. महेंद्र सिंह ने कहा कि आजादी के संग्राम का प्रथम अध्याय 1857 में शुरू हुआ जिसमें करीब 60 हजार महिलाओं ने बलिदान दिया। नेताजी की रेजिमेंट में लक्ष्मी बाई के नाम से एक रेजिमेंट थी जिसका नेतृत्व लक्ष्मी सहगल ने किया। बतायानी देवी ने सन 1944 में 3 करोड़ रुपये की राशि स्वतंत्रता संग्राम के लिए सुभाष चंद्र बोस को दी। हरियाणा से कैथल की महारानी महताब कौर, लक्ष्मी, चांद बाई, लज्जावती, कमलादेवी, मन्नी देवी, उषा देवी, राधा देवी, लक्ष्मी तायल का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार और गृह विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. मंजू महता का विशेष योगदान रहा। मंच का संचालन डॉ. मोहित ने किया। धन्यवाद प्रस्ताव पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र के उपाध्यक्ष डॉ. अवनीश वर्मा ने प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी में दीप प्रज्वलित करते एचएयू कुलपति प्रो.बीआर कांबोज। संवाद

शोध को जन-जन तक पहुंचाना होगा

हिसार। कृषि वैज्ञानिकों का समाज के साथ निरंतर वैचारिक आदान-प्रदान अति महत्वपूर्ण है। यदि वैज्ञानिक अपने शोध को जन-जन तक पहुंचाने में सफल हैं तभी इनके ज्ञान का विशेष महत्व है। एचएयू के कुलपति प्रो. बलदेव राज कांबोज ने जीजेयू के मानव संसाधन विकास केंद्र में दौरे पर व्यक्त किए। मानव संसाधन विकास केंद्र के निदेशक डॉ. मनोज दयाल ने इस अवसर पर 'विस्तारक कार्यकर्ताओं में प्रभावी संचार कैसे विकसित की जाए?'

विषय पर अपने उद्बोधन में कहा कि जिस प्रकार राजनीतिज्ञ जनता की नब्ज को पढ़ता है, डॉक्टर अपनी मरीज की नब्ज को पढ़ता है और तभी सफल भी होता है। उसी प्रकार एक कुशल व प्रभावी संचारक को अपने ऑडियंस की नब्ज पढ़नी होगी। ऑडियंस की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, मनोवैज्ञानिक स्थिति, सामाजिक परिप्रेक्ष्य, भाषाई व वैचारिक स्तर को अवश्य ही समझना चाहिए। संचार में बॉडी लैंग्वेज 90 प्रतिशत से अधिक भूमिका का निर्वहन करती है। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में रिफ्रेशर कोर्स में 25 सहायक प्रोफेसर भाग ले रहे हैं। डॉ. जितेंद्र भाटिया व सह समन्वयक डॉ. अंजू सहरावत के नेतृत्व में आए थे। सहभागियों ने गुरु जंभेश्वर मंदिर में जांभोजी महाराज के समक्ष मत्था टेकते हुए विश्वविद्यालय के धार्मिक अध्ययन संस्थान केंद्र के अधिष्ठाता व विभागाध्यक्ष प्रो. किशना राम बिश्नोई से जांभोजी के महत्वपूर्ण उपदेशों से अवगत हुए। इस मौके पर शिक्षा अध्ययन संकाय की अधिष्ठात्री प्रो. वंदना पूनिया, प्रो. नीरज दिलबागी मौजूद रहे। संवाद

आजादी का अमृत महोत्सव में बोले कुलपति

देश निर्माण में महिलाओं का योगदान अहम : प्रो. कांबोज

स्वतंत्रता संग्राम में भी रानी लक्ष्मी बाई सरीखी वीरांगनाओं ने अहम भूमिका निभाई।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। कार्यक्रम का शुभारंभ करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में महिलाओं का योगदान अविस्मरणीय है। देश के स्वतंत्रता संग्राम में अदम्य साहस का उन्होंने परिचय दिया। यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कही। वह बुधवार को आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र, हिसार के सहयोग से विश्वविद्यालय द्वारा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महिलाओं का योगदान विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

कुलपति ने कहा भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि वे एक ऐसी राष्ट्रीय शक्ति है जो राष्ट्र की स्वाधीनता और अधिकारों के लिए सभी बंधनों से मुक्त होकर बड़ी से बड़ी शक्ति से लोहा ले सकती हैं। उन्होंने इस राष्ट्रीय आंदोलन में अपने आपको विविध आयामों के साथ प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा स्वाधीनता संग्राम के आरंभ से लेकर अंत तक महिलाओं ने शांतिपूर्ण आंदोलनों से लेकर क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रियता से भाग ही नहीं लिया अपितु अपने प्राणों की आहुति दी। स्वाधीनता के लिए 1857 में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अपने प्राणों का बलिदान दिया। इसी प्रकार ऐसी अनेक वीरांगनाएं हैं जिन्होंने गांधीजी के ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आंदोलनों में भाग लिया और गिरफ्तारी भी दी। दयानंद महाविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. महेन्द्र सिंह ने बतौर मुख्य वक्ता कहा कि असंख्य महिलाओं के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने से आजादी का यह आंदोलन सक्रिय बन सका।

हरियाणा की महिलाएं भी पीछे नहीं

उन्होंने कहा आजादी के संग्राम का प्रथम अध्याय 1857 में शुरू हुआ जिसमें करीब 60 हजार महिलाओं ने बलिदान दिया। उन्होंने कहा स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणा से कैथल की महारानी महताब कौर, लक्ष्मी, चांद बाई, लज्जावती, कमलादेवी, मन्नी देवी, उषा देवी, राधा देवी, लक्ष्मी तायल आदि अनेक महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस मौके पर हरियाणा शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, लुवास के कुलपति प्रो. विनोद कुमार वर्मा, पंचनद शोध संस्थान अध्ययन केन्द्र के संरक्षक जीसी बंसल, डॉ. अवनीश वर्मा, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार, अधिष्ठाता डॉ. मंजू महता, डॉ. मोहित आदि मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	12.5.22	5	3-7

भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में महिलाओं का अविस्मरणीय योगदान : काम्बोज

हिसार, 11 मई (विरेंद्र वर्मा) : भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में महिलाओं का योगदान अविस्मरणीय है। देश के स्वतंत्रता संग्राम में जिस अदम्य साहस का उन्होंने परिचय दिया उसने भारत माता के गौरव को बढ़ाया है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे आज आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र, हिसार के सहयोग से विश्वविद्यालय द्वारा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महिलाओं का योगदान' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

कुलपति ने कहा भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि वे एक ऐसी राष्ट्रीय शक्ति है जो राष्ट्र की स्वाधीनता और अधिकारों के लिए सभी बंधनों से मुक्त होकर बड़ी से बड़ी-शक्ति से लोहा ले सकती हैं। उन्होंने इस राष्ट्रीय आंदोलन में अपने आपको विविध आयामों के साथ प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा स्वाधीनता संग्राम के आरंभ से लेकर अंत तक महिलाओं ने शांतिपूर्ण आंदोलनों से लेकर क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रियता से भाग ही नहीं लिया अपितु अपने प्राणों की आहूति तक दी। स्वाधीनता के लिए 1857 में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई द्वारा विश्व के सबसे महान व शक्तिशाली साम्राज्य का विद्रोह जिसमें इस महान वीरांगना ने अपने प्राणों का बलिदान तक कर दिया, हम सबको याद है। इसी प्रकार ऐसी अनेक वीरांगनाएं हैं जिन्होंने गांधी के ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आंदोलनों में भाग लिया और गिरफ्तारी भी दी। उन्होंने इस आंदोलन में अपने आपको विभिन्न आयामों के साथ प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा महिलाएं पुरूषों से न कल पीछे थी और न आज। वे पुरूषों के समान प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा आजादी के 75 साल पूरे हो गए हैं परन्तु देशवासियों के दिल में आज भी उन शख्सियतों के लिए प्यार और सम्मान कम नहीं हुआ है, जिन्होंने ओजादी की खातिर अपने प्राण तक न्यौछावर कर दिए।

दयानंद महाविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर एवं इतिहासकार डॉ. महेन्द्र सिंह ने मुख्य वक्ता के तौर पर बोलते हुए कहा कि असंख्य

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

महिलाओं के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण ही आजादी का यह महान आंदोलन सक्रिय बन सका। उन्होंने देश के प्रति प्रेम भावना का परिचय देते हुए व उसे स्वतंत्र कराने के लिए सभी तरीकों से अपना योगदान दिया और अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। उन्होंने कहा आजादी के संग्राम का प्रथम अध्याय 1857 में शुरू हुआ जिसमें करीब 60 हजार महिलाओं ने बलिदान दिया। उन्होंने कहा कि सरोजनी नायडू, अरूणा आसिफ अली, सुचेता कृपलानी, एनी बेसेंट, कमला देवी चटोपाध्याय, कस्तूरबा गांधी, विजय लक्ष्मी पंडित, मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी, हन्सा मेहता तथा राजकुमारी अमृता कौर जैसी अनेक महिलाओं के योगदान को इतिहास कभी भुला नहीं कर पायेगा। उन्होंने महारानी लक्ष्मीबाई को महान वीरांगना बताया। उन्होंने कहा नेता जी सुभाष चंद्र बोस की रेजिमेंट में लक्ष्मी बाई के नाम से एक रेजीमेंट थी जिसका नेतृत्व लक्ष्मी सहगल ने किया। बतावानी देवी ने सन् 1944 में 3 करोड़ रूपए की राशि स्वतंत्रता संग्राम के लिए सुभाष चंद्र बोस को दी। इस रेजिमेंट की महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में बढ़चढ़ कर भाग लिया। उन्होंने कहा स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणा की महिलाओं की भूमिका भी कम नहीं रही है। इनमें कैथल की महारानी महताब कौर, लक्ष्मी, चांद बाई, लज्जावती, कमलादेवी, मत्री देवी, उषा देवी, राधा देवी, लक्ष्मी तायल इत्यादि अनेको महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार और गृह विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. मंजू महता का इस कार्यक्रम के आयोजन में महती योगदान रहा। मंच का संचालन डॉ. मोहित ने जबकि धन्यवाद प्रस्ताव पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र के उपाध्यक्ष डॉ. अवनीश वर्मा ने किया। पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र के संरक्षक जी.सी. बंसल भी मंच पर उपस्थित थे। इस अवसर पर हरियाणा शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, लुवास के कुलपति प्रो. विनोद कुमार वर्मा सहित विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, कर्मचारी व भारी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय			
समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	12.5.22	4	4-6

देश के गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में महिलाओं का अविस्मरणीय योगदान : कुलपति प्रो. काम्बोज

जागरण संवाददाता, हिसार: भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में महिलाओं का योगदान अविस्मरणीय है। देश के स्वतंत्रता संग्राम में जिस अदम्य साहस का उन्होंने परिचय दिया उसने भारत माता के गौरव को बढ़ाया है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने व्यक्त किए। वे बुधवार को आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र, हिसार के सहयोग से विश्वविद्यालय द्वारा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महिलाओं के योगदान विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज, दयानंद महाविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर एवं इतिहासकार डा. महेन्द्र सिंह व अन्य। • जागरण

कुलपति ने कहा भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि वे एक ऐसी राष्ट्रीय शक्ति हैं जो राष्ट्र की स्वाधीनता और अधिकारों के लिए सभी बंधनों से मुक्त होकर बड़ी से बड़ी शक्ति से लोहा ले सकती हैं। उन्होंने इस राष्ट्रीय आंदोलन में अपने आपको विविध आयामों के साथ प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता दयानंद महाविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर एवं इतिहासकार डा. महेन्द्र सिंह ने कहा कि असंख्य महिलाओं के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण ही आजादी का यह महान आंदोलन सक्रिय बन सका। कार्यक्रम में मंच का संचालन डा. मोहित, अध्ययन केन्द्र के उपाध्यक्ष डा. अवनीश वर्मा ने किया। इस मौके पर पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र के संरक्षक जीसी बंसल, हरियाणा शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डा. जगबीर सिंह, लुवास के कुलपति प्रो. विनोद कुमार वर्मा सहित विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	12.5.22	2	6-7

गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में महिलाओं का योगदान : वीसी

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में महिलाओं का योगदान अविस्मरणीय है।

कुलपति बुधवार को आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र के सहयोग से विश्वविद्यालय द्वारा 'भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महिलाओं का योगदान' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। दयानंद महाविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर एवं इतिहासकार डॉ. महेन्द्र सिंह ने मुख्य वक्ता के तौर पर कहा कि महिलाओं के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण ही आजादी का यह आंदोलन सक्रिय बन सका।

मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार और गृह विज्ञान कॉलेज की अधिष्ठाता डॉ. मंजू महता का कार्यक्रम के आयोजन में योगदान रहा। मंच का संचालन डॉ. मोहित ने जबकि धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. अवनीश वर्मा ने किया। पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र के संरक्षक जीसी बंसल भी मंच पर उपस्थित थे। इस अवसर पर हरियाणा शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, लुवास के कुलपति प्रो. विनोद कुमार वर्मा सहित अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, कर्मचारी व भारी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	12.5.22	4	3-4

स्वतंत्रता संग्राम में आधी आबादी की भूमिका पर संगोष्ठी

महिलाओं ने भी दिखाए थे जौहर

हिसार, 11 मई (निस)

आजादी का अमृत महोत्सव पर पंचनद शोध संस्थान अध्ययन केंद्र के सहयोग से चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महिलाओं का योगदान विषय पर आयोजित संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें वक्ताओं ने कहा कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि वे एक ऐसी राष्ट्रीय शक्ति हैं, जो राष्ट्र की स्वाधीनता और अधिकारों के लिए सभी बंधनों से मुक्त होकर बड़ी से बड़ी शक्ति से लोहा ले सकती हैं। दयानंद महाविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर एवं इतिहासकार महेंद्र सिंह ने मुख्य वक्ता के तौर पर बोलते हुए कहा कि असंख्य महिलाओं के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण ही आजादी का यह आंदोलन सक्रिय बन सका। कार्यक्रम को हरियाणा शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष जगबीर सिंह, लुवास के कुलपति प्रो. विनोद कुमार वर्मा ने भी संबोधित किया। इस मौके पर विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	12.05.2022	03	5-8

भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में महिलाओं का अविस्मरणीय योगदानः कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार: भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में महिलाओं का योगदान अविस्मरणीय है। देश के स्वतंत्रता संग्राम में जिस अदम्य साहस का उन्होंने परिचय दिया उसने भारत माता के गौरव को बढ़ाया है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे आज आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र, हिसार के सहयोग से विश्वविद्यालय द्वारा 'भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महिलाओं का योगदान' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

कुलपति ने कहा भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि वे एक ऐसी राष्ट्रीय शक्ति है जो राष्ट्र की स्वाधीनता और अधिकारों के लिए सभी बंधनों से मुक्त होकर बड़ी से बड़ी शक्ति से लोहा ले सकती हैं। उन्होंने इस राष्ट्रीय आंदोलन में अपने आपको विविध आयामों के साथ प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा स्वाधीनता संग्राम के आरंभ से लेकर अंत तक महिलाओं ने शांतिपूर्ण आंदोलनों से लेकर क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रियता से भाग ही नहीं लिया अपितु अपने प्राणों की आहुति तक दी। स्वाधीनता के लिए 1857 में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई द्वारा विश्व के सबसे महान व शक्तिशाली साम्राज्य का विद्रोह जिसमें इस महान विरांगना ने अपने प्राणों का बलिदान तक कर दिया, हम सबको याद है। इसी प्रकार ऐसी अनेक वीरांगनाएं हैं जिन्होंने गांधी जी के ब्रिटिश शासन के विरूद्ध आंदोलनों में भाग लिया और गिरफ्तारी भी दी। उन्होंने इस आंदोलन में अपने आपको विभिन्न आयामों के साथ प्रस्तुत किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	12.05.2022	--	--

भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में महिलाओं का अविस्मरणीय योगदान: कुलपति

हिसार (सच कहूं न्यूज)।

भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में महिलाओं का योगदान अविस्मरणीय है। देश के स्वतंत्रता संग्राम में जिस अदम्य साहस का उन्होंने परिचय दिया उसने भारत माता के गौरव को बढ़ाया है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष में पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र, हिसार के सहयोग से विश्वविद्यालय द्वारा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महिलाओं का योगदान विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। कुलपति ने कहा भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि वे एक ऐसी राष्ट्रीय शक्ति है, जो राष्ट्र की स्वाधीनता और अधिकारों के लिए सभी बंधनों से मुक्त होकर बड़ी से बड़ी शक्ति से लोहा ले सकती हैं। उन्होंने इस राष्ट्रीय आंदोलन में अपने आपको विविध आयामों के साथ प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा स्वाधीनता संग्राम के आरंभ से लेकर अंत तक महिलाओं ने शांतिपूर्ण आंदोलनों से लेकर क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रियता से भाग ही नहीं लिया अपितु अपने प्राणों की आहुति तक दी। स्वाधीनता के लिए 1857 में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई द्वारा विश्व के सबसे महान व शक्तिशाली साम्राज्य का विद्रोह जिसमें इस महान वीरांगना ने अपने प्राणों का बलिदान तक कर दिया, हम सबको याद है। इसी प्रकार ऐसी अनेक वीरांगनाएं हैं जिन्होंने गांधी जी के ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आंदोलनों में भाग लिया और गिरफ्तारी भी दी। उन्होंने इस आंदोलन में अपने आपको विभिन्न आयामों के साथ प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा महिलाएं पुरुषों से न कल पीछे थी और न आज। वे पुरुषों के समान प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा आजादी के 75 साल पूरे हो गए हैं परन्तु देशवासियों के दिल में आज भी उन शख्सियतों के लिए प्यार और सम्मान कम नहीं हुआ है, जिन्होंने आजादी की खातिर अपने प्राण तक न्यौछावर कर दिए। इस अवसर पर हरियाणा शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, लुवास के कुलपति प्रो. विनोद कुमार वर्मा सहित विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, कर्मचारी व भारी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	11.05.2022	--	--

महिलाएं पुरूषों से न कल पीछे थी और न आज : वीसी

कुलपति प्रो. काम्बोज बोले, भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में महिलाओं का अविस्मरणीय योगदान

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में महिलाओं का योगदान अविस्मरणीय है। देश के स्वतंत्रता संग्राम में जिस अदम्य साहस का उन्होंने परिचय दिया उसने भारत माता के गौरव को बढ़ाया है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे आज आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र, हिसार के सहयोग से विश्वविद्यालय द्वारा 'भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महिलाओं का योगदान' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

कुलपति ने कहा भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि वे एक ऐसी राष्ट्रीय शक्ति है जो राष्ट्र की स्वाधीनता और अधिकारों के लिए सभी बंधनों से मुक्त होकर बड़ी से बड़ी शक्ति से लोहा ले सकती हैं। उन्होंने इस राष्ट्रीय आंदोलन में अपने आपको विविध आयामों के साथ प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा स्वाधीनता संग्राम के आरंभ से लेकर अंत तक महिलाओं ने शांतिपूर्ण आंदोलनों से लेकर क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रियता से भाग ही नहीं लिया अपितु अपने प्राणों की आहुति तक दी। उन्होंने कहा महिलाएं पुरूषों से न कल पीछे थी और न आज। वे पुरूषों के समान प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं।

अनेक महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया : डॉ. महेन्द्र

दयानंद महाविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर एवं इतिहासकार डॉ. महेन्द्र सिंह ने मुख्य वक्ता के तौर पर बोलते हुए कहा कि असंख्य महिलाओं के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण ही आजादी का यह महान आंदोलन सक्रिय बन सका। उन्होंने देश के प्रति प्रेम भावना का परिचय देते हुए व उसे स्वतंत्र कराने के लिए सभी तरीकों से अपना योगदान दिया और अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार और गृह विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. मंजू महता का इस कार्यक्रम के आयोजन में महती योगदान रहा। मंच का संचालन डॉ. मोहित ने जबकि धन्यवाद प्रस्ताव पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र के उपाध्यक्ष डॉ. अजनीश वर्मा ने किया। पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र के संरक्षक बी.सी. बंसल भी मंच पर उपस्थित थे।

यह रहे मौजूद

इस अवसर पर हरियाणा शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, लुवास के कुलपति प्रो. विनोद कुमार वर्मा सहित विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, कर्मचारी व भारी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	11.05.2022	--	--

भारत के इतिहास के निर्माण में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान: प्रो. बीआर कम्बोज

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण है। देश के स्वतंत्रता संग्राम में जिस अदम्य साहस का उन्होंने परिचय दिया उसने भारत माता के गौरव को बढ़ाया है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. कम्बोज ने व्यक्त किए। वे आज विश्वविद्यालय द्वारा 'भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महिलाओं का योगदान' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

कुलपति ने कहा भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि वे एक ऐसी राष्ट्रीय शक्ति है जो राष्ट्र की स्वाधीनता और अधिकारों के लिए सभी बंधनों से मुक्त होकर बड़ी से बड़ी शक्ति से लोहा ले सकती हैं। उन्होंने इस राष्ट्रीय आंदोलन में अपने आपको विविध आयामों के साथ प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा स्वाधीनता संग्राम के आरंभ से लेकर अंत तक महिलाओं ने शांतिपूर्ण आंदोलनों से लेकर क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रियता से भाग ही नहीं लिया अपितु अपने प्राणों की आहूति तक दी।

दयानंद महाविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर एवं इतिहासकार डॉ. महेन्द्र सिंह ने मुख्य वक्ता के तौर पर बोलते हुए कहा कि सरोजनी नायडू , अरूणा आसिफ अली, सुचेता कृपलानी, एनी बेसेंट, कमला देवी चटोपाध्याय, कस्तूरबा गांधी, विजय लक्ष्मी पंडित जैसी अनेक महिलाओं के योगदान को इतिहास कभी भुला नहीं कर पायेगा। उन्होंने महारानी लक्ष्मीबाई को महान वीरांगना बताया।

इस अवसर पर हरियाणा शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, लुवास के कुलपति प्रो. विनोद कुमार वर्मा सहित विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, कर्मचारी व विद्यार्थी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	11.05.2022	--	--

महिलाएं पुरूषों से न कल पीछे थी और न आज : कुलपति

हिसार/ 11 मई/ रिपोर्टर

भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में महिलाओं का योगदान अविस्मरणीय है। देश के स्वतंत्रता संग्राम में जिस अदम्य साहस का उन्होंने परिचय दिया उसने भारत माता के गौरव को बढ़ाया है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने आज पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र के सहयोग से विश्वविद्यालय द्वारा 'भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महिलाओं का योगदान' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्यातिथि व्यक्त किए।

कुलपति ने कहा भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि वे एक ऐसी राष्ट्रीय शक्ति हैं जो राष्ट्र की स्वाधीनता और अधिकारों के लिए सभी बंधनों से मुक्त होकर बड़ी से बड़ी शक्ति से लोहा ले सकती हैं। उन्होंने इस राष्ट्रीय आंदोलन में अपने आपको विविध आयामों के साथ प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि स्वाधीनता संग्राम के आरंभ से लेकर अंत तक महिलाओं ने शांतिपूर्ण आंदोलनों से लेकर क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रियता से भाग ही नहीं लिया अपितु अपने प्राणों की आहूति तक दी। स्वाधीनता के लिए 1857 में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अपने प्राणों का बलिदान तक कर दिया, हम सबको याद है। इसी प्रकार ऐसी अनेक वीरांगनाएं हैं जिन्होंने गांधी जी के ब्रिटिश शासन के विरूद्ध आंदोलनों में भाग लिया और गिरफ्तारी भी दी। उन्होंने कहा महिलाएं पुरूषों से न कल पीछे थी और न आज। वे पुरूषों के समान प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। मुख्य वक्ता दयानंद महाविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर एवं इतिहासकार डॉ. महेन्द्र सिंह ने कहा कि असंख्य महिलाओं के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण ही आजादी का यह महान आंदोलन सक्रिय बन सका। उन्होंने कहा आजादी के संग्राम का प्रथम अध्याय 1857 में शुरू हुआ जिसमें करीब 60 हजार महिलाओं ने बलिदान दिया।

मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार और गृह विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. मंजू महता का कार्यक्रम के आयोजन में योगदान रहा। मंच का संचालन डॉ. मोहित ने जबकि धन्यवाद प्रस्ताव पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र के उपाध्यक्ष डॉ. अवनीश वर्मा ने किया। केन्द्र के संरक्षक जीसी बंसल भी मंच पर उपस्थित थे। इस अवसर पर हरियाणा शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, लुवास के कुलपति प्रो. विनोद कुमार वर्मा आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	11.05.2022	--	--

भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में महिलाओं का अविस्मरणीय योगदान : कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में महिलाओं का योगदान अविस्मरणीय है। देश के स्वाधीनता संग्राम में जिस अदम्य साहस का उन्होंने परिचय दिया उसने भारत माता के गौरव को बढ़ाया है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे आज आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में दयानंद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र, हिसार के सहयोग से विश्वविद्यालय द्वारा 'भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। कुलपति ने कहा भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि वे एक ऐसी राष्ट्रीय शक्ति हैं जो राष्ट्र की स्वाधीनता और अधिकारों के लिए सभी बंधनों से मुक्त होकर बड़ी से बड़ी शक्ति से लोहा ले सकती हैं। उन्होंने इस राष्ट्रीय आंदोलन में अपने आपको विभिन्न आदर्शों के रूप प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा स्वाधीनता संग्राम के आरंभ से लेकर अंत तक महिलाओं ने शांतिपूर्ण आंदोलनों से लेकर क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रियता से भाग ही नहीं लिया अपितु अपने प्राणों की आहुति तक दी। स्वाधीनता के लिए 1857 में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई द्वारा किए गए उनके साहस व शक्तिशाली साम्राज्य का विरोध जिसमें इस महान वीरांगना ने अपने प्राणों का बलिदान तक कर दिया, हम सबको याद है। इसी प्रकार ऐसी अनेक वीरांगनाएं हैं जिन्होंने गांधी जी के ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आंदोलनों में भाग लिया और गिरफ्तारी भी दी। उन्होंने इस आंदोलन में अपने आपको विभिन्न आदर्शों के रूप प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा महिलाएं पुरुषों से न कल पीछे थी और न आज। वे पुरुषों के समान प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा आजादी के 75 साल पूरे हो गए हैं परन्तु देशवासियों के दिल में आज भी उन शख्सियतों के लिए प्यार और सम्मान कम नहीं हुआ है, जिन्होंने आजादी की खातिर अपने प्राण तक न्यौछावर कर दिए। दयानंद महाविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर एवं इतिहासकार डॉ. महेन्द्र सिंह ने मुख्य वक्ता के

तौर पर बोलते हुए कहा कि अनेक महिलाओं के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण ही आजादी का यह महान आंदोलन सफल बन सका। उन्होंने देश के प्रति प्रेम भावना का परिचय देते हुए व उसे स्वतंत्र कराने के लिए सभी महिलाओं ने अपना योगदान दिया और अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। उन्होंने कहा आजादी के संग्राम का प्रथम अध्याय 1857 में शुरू हुआ जिसमें करीब 60 हजार महिलाओं ने बलिदान दिया। उन्होंने कहा श्रीमती सरोजनी नायडू, अरुणा आसिफ अली, श्रीमती सुचेता कृपलानी, एनी बेसेंट, कमला देवी चट्टोपाध्याय, कस्तूरबा गांधी, विजय लक्ष्मी पंडित, मुथुलक्ष्मी रेड्डी, एनी बेसेंट, हन्सा मेहता तथा राजकुमारी अमृत कौर जैसी अनेक महिलाओं के योगदान को इतिहास कभी भुला नहीं पायेगा। उन्होंने महारानी लक्ष्मीबाई को महान वीरांगना बताया। उन्होंने कहा नेता जी सुभाष चंद्र बोस की रेजिमेंट में लक्ष्मी बाई के नाम से एक रेजिमेंट थी जिसका नेतृत्व लक्ष्मी सहगल ने किया। [illegible] देवी ने सन 1944 में 3 करोड़ रुपए की राशि स्वतंत्रता संग्राम के लिए सुभाष चंद्र बोस को दी। इस रेजिमेंट की महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में बढ़चढ़ कर भाग लिया। उन्होंने कहा स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणा की महिलाओं की भूमिका भी कम नहीं रही है। इनमें केवल [illegible] लक्ष्मी, [illegible] बाई, [illegible] इत्यादि अनेकों महिला [illegible] मौलिक विज्ञान एवं मानविकी [illegible] कुमार और गृह विज्ञान महाविद्यालय [illegible] महत्वपूर्ण इस कार्यक्रम के आयोजन में महती योगदान रहा। मंच का संचालन डॉ. [illegible] ने किया। धन्यवाद प्रस्ताव दयानंद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र के उपाध्यक्ष डॉ. [illegible] ने किया। दयानंद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र के संरक्षक [illegible] भी मंच पर उपस्थित थे। इस अवसर पर हरियाणा शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह, गुरुग्राम के कुलपति प्रो. विनोद कुमार सहित विश्वविद्यालय के अधिकारी, निदेशक, विभागाध्यक्ष, कर्मचारी व भारी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

3/4

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	12.5.22	4	1-4

कृषि वैज्ञानिकों के विकास में मानव संसाधन केंद्र की अहम भूमिका : प्रो. कांबोज

हिसार, 11 मई (ब्यूरो): कृषि वैज्ञानिकों का समाज के साथ निरंतर वैचारिक आदान-प्रदान अति महत्वपूर्ण है। यदि ये वैज्ञानिक अपने शोध को जन-जन तक पहुंचाने में सफल हैं तभी इनके ज्ञान का विशेष महत्व है। अन्यथा सैद्धांतिक कृषि ज्ञान की कोई सार्थकता नहीं रह जाती। यह बात कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने हकृवि के कृषि वैज्ञानिकों के गुजवि के मानव संसाधन विकास केंद्र में दौरे पर उक्त विचार व्यक्त किए। प्रो. काम्बोज ने कहा कि दोनों विश्वविद्यालयों के संयुक्त प्रयासों से कृषि एवं विज्ञान के क्षेत्र में बहुत ही सार्थक कार्य किए जा सकते हैं। कुलसचिव प्रो. अवनीश वर्मा ने कृषि शोध की महत्व पर प्रकाश डाले व कृषि जैसे विशालतम क्षेत्र में शोध की बढ़ती हुई महत्ता पर बल दिया।

गुजवि के जनसंचार के वरिष्ठ प्रोफैसर एवं मानव संसाधन विकास केंद्र के निदेशक डॉ. मनोज दयाल ने इस अवसर पर 'विस्तारक कार्यकर्ताओं में प्रभावी संचार कैसे विकसित की जाए?' विषय पर अपने उद्बोधन में कहा कि जिस प्रकार राजनीतिज्ञ जनता की नब्ज को पढ़ता है, डॉक्टर अपनी मरीज की नब्ज को पढ़ता है और तभी सफल भी होता है। ठीक उसी प्रकार एक कुशल व प्रभावी संचारक को अपने ऑडियंस का नब्ज पढ़ना होता है। प्रो. दयाल ने कहा कि संचार में बॉडी लैंग्वेज 90 प्रतिशत से अधिक भूमिका का निर्वहन करती है। इसलिए संदेशवाहक को अपनी भाषा एवं शरीर भाषा दोनों में एक उचित तालमेल व समन्वय के साथ ही संप्रेषण करना चाहिए ताकि संदेश उसी रूप में ग्रहण किया जा सके जिस रूप में संप्रेषक उसे व्यक्त करना चाहता है। ज्ञात रहे कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में रिफ्रेशर कोर्स में भाग ले रहे 25 सहायक प्रोफेसर आज गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के मानव संसाधन विकास केंद्र के दौरे पर अपने समन्वयक डॉ. जितेंद्र भाटिया व सह समन्वयक डॉ. अंजू के नेतृत्व में आए थे। सहभागियों ने गुरु जम्भेश्वर भवन के बाद बायो एंड नैनो टैक्नोलॉजी विभाग के अलावा कई अन्य महत्वपूर्ण केंद्रों का भी दौरा किया।

गुजवि में दौरे के दौरान मौजूद हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिक। साथ हैं गुजवि के वरिष्ठ प्रोफैसर डा. मनोज दयाल व अन्य।

भारत के गौरवपूर्ण इतिहास में महिलाओं का अविस्मरणीय योगदान : कुलपति

हिसार (ब्यूरो): भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के निर्माण में महिलाओं का योगदान अविस्मरणीय है। देश के स्वतंत्रता संग्राम में जिस अदम्य साहस का उन्होंने परिचय दिया उसने भारत माता के गौरव को बढ़ाया है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे आज आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केन्द्र, हिसार के सहयोग से विश्वविद्यालय द्वारा 'भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महिलाओं का योगदान' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

कुलपति ने कहा कि स्वाधीनता संग्राम के आरंभ से लेकर अंत तक महिलाओं ने शांतिपूर्ण आंदोलनों से लेकर क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रियता से भाग ही नहीं लिया अपितु अपने प्राणों की आहूति तक दी। दयानंद महाविद्यालय के एसोसिएट प्रोफैसर एवं इतिहासकार डॉ. महेन्द्र सिंह ने मुख्य वक्ता के तौर पर बोलते हुए कहा कि असंख्य महिलाओं के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण ही आजादी का यह महान आंदोलन सक्रिय बन सका।